प्रकृति विज्ञान

बच्चों को मारना प्रकृति विरोधी

अशोक 'मानव'

लगभग लोग अपना गुस्सा बच्चों के ऊपर उतारते हैं। लगता है सारा दोश बच्चों का है। समाज है निर्दोश को ही तो दोशी मानता है। जो बोल नहीं सकता वही तो दोशी है। क्रोध किसी और के कारण होता है उसका कुछ करने का बस नहीं चलता है तो गुस्सा कहीं उतरना चाहिए। जब गुस्सा जिसके कारण हुआ है उसके ऊपर नहीं निकलता तो व्यक्ति अपना गुस्सा निर्दोश बालक पर उतारता है जो ऐसा करते है उनहें इसका आभास होता है। ऐसा अक्सर देखने को मिलता है कि कोई व्यक्ति गुस्से में घर आता है तो बच्चे में झूठी गलती निकाल कर उसे मारता है। माँ तो मारने के मामले में बच्चे की दुश्मन होती है क्या करे जितना अधिकार इनका बच्चों पर होता है उतना किसी और को कहाँ होता है? तो फिर ये अपना गुस्सा कहाँ उतारें? ऐसा देखने में ज्यादा आता है कि जो माँ क्रोध में होती है ये बच्चे को ज्यादा मारती हैं। कुछ ऐसी भी होती है जो दूसरों को दिखाने के लिए मारती हैं। बच्चे की गलती तो एक कारण बनता है बात कुछ और होती है। क्योंकि बच्चा गलत सही नहीं जानता है वह तो अपने आनन्द के लिए खेलता है फिर उसका क्या दोष है। क्या सोंच है मानव समाज की? यदि मानव समाज इस विषय पर अपनी सोच बदले तो उसे बहुत लाभ मिलेगें। प्रकृति बचचे को तब तक सुरक्षित रखने में अपना पूरा सहयोग देती है जब तक कि वह सत्–असत् का अन्तर नहीं कर पाता है इसके बाद सत् प्रकृति उसी को पूर्ण सहयोग देती है जो सत् पर चलता हैं बाल्यावस्था में बालक सब कुछ सीखता है इससे पहले वह कोरा कागज होता है इस काल में उस कागज पर कुछ भी लिखा जा सकता है। कोरे कागज रूपी बालक पर कलम से नहीं लिखा जा सकता है। इसके ऊपर कलम से लिखने के लिए बालक की भावना षुद्ध होनी आवश्यक है तभी प्रकृति उसका साथ देगी

क्योंकि प्रकृति में शुद्ध अशुद्ध दोनों भावना घूम रही है। जो जिस भावना में रहता है प्रकृति से वैसी ही भावना प्रवेश करती है। बच्चा जब किसी के द्वारा मार खाता है उस समय उसके स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ जाता है जिसकी अशुद्ध भावना उसके जिसकी अशुद्ध भावना उसके अन्दर जनम लेती है। बच्चे के अन्दर अच्छी भावना बनाकर गलत बात को समझा देना चाहिए बच्चे में ज्यों–ज्यों समझ आयेगी वह उसे अवष्य मानेगा। घर की जैसी संस्कृति होती है बच्चा वैसा ही बनता है। बच्चे के निर्माण में सबसे अधिक हाथ माँ का होता है माँ सबसे अधिक प्यार भी बच्चे से

करती है। फिर क्यों बच्चों को इस तरह मारती है? क्या वे ये भूल जाती हैं कि वे भी कभी बच्चा थीं? तो मुझे भी मार पड़ती थी? क्यों ऐसी भावना नहीं आती कि मेरे साथ कोई गलत किया है तो मुझे दूसरे के साथ गलत नहीं करना चाहिए। जो माँ बच्चे से इतना अधिक प्यार करती है और अपने बच्चे को हमेशा खुश देखना चाहती है फिर क्यों उसे मार कर दुःखी देखना चाहती है। बच्चे को मार कर उसका निर्माण नहीं किया जा सकता है उसे तो सिर्फ प्यार से समझा कर कुछ किया जा सकता है। एक निर्दोश को मारना सत्य को मारने के बराबर होता है। औरतों को अपना क्रोध अपने बस में करना चाहिए उसे बच्चों के ऊपर नहीं व्यक्त करना चाहिए। जो बच्चा जितना अधिक दुखी रहता है उतना ही अधिक रोग उसके पास आता है। इसलिए सभी लोग बच्चे को मारना बन्द करें जिससे बच्चे स्वस्थ रहेगें।□